

# शहदखोज चिड़िया का बंदना



Zulu folktales  
Wiehan de Jager  
Nandani  
4  
हिंदी

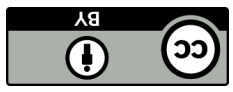


# Global Storybooks

[globalstorybooks.net](http://globalstorybooks.net)

## शहदखोज चिड़िया का बंदना

Zulu folktales  
Wiehan de Jager  
Nandani



This work is licensed under a Creative Commons Attribution 3.0 International License.  
<https://creativecommons.org/licenses/by/3.0>





यह कहानी नगेदे नामक एक शहदखोज चिड़िया और एक लालची युवक गिगिइले की है। एक दिन जब गिगिइले शिकार के लिए बाहर गया था तो उसने नगेदे की आवाज़ सुनी। गिगिइले के मुँह में शहद के बारे में सोच कर पानी आ गया। वह रुक गया, उसने ध्यान से सुना और नगेदे को ढूँढ़ने लगा, थोड़ी देर में उसे वह अपने सर के ऊपर वाली शाखा पर बैठा दिख गया। “चिटिके, चिटिके, चिटिके,” एक से दूसरे पेड़, और अगले पेड़ पर जाते हुए पक्षी ज़ोर से बोला। वह रुक-रुक कर “चिटिके, चिटिके, चिटिके,” बोलने लगा और पक्का करने लगा कि गिगिइले उसके पीछे आ रहा है।

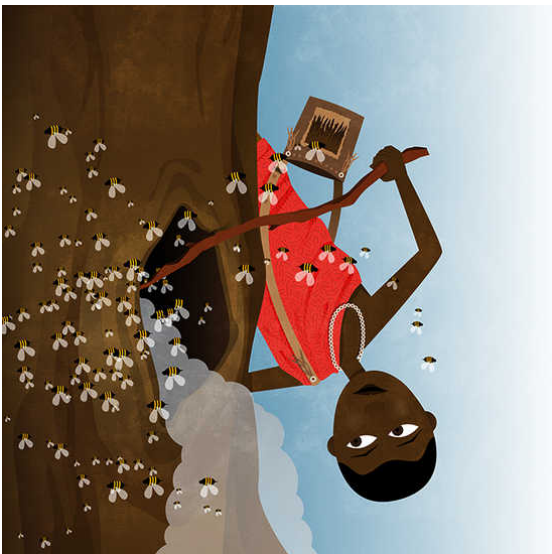
एक वृक्ष 'मैंने  
एक दिन 'मैंने  
एक दिन 'मैंने  
एक दिन 'मैंने  
एक दिन 'मैंने  
एक दिन 'मैंने  
एक दिन 'मैंने  
एक दिन 'मैंने  
एक दिन 'मैंने  
एक दिन 'मैंने



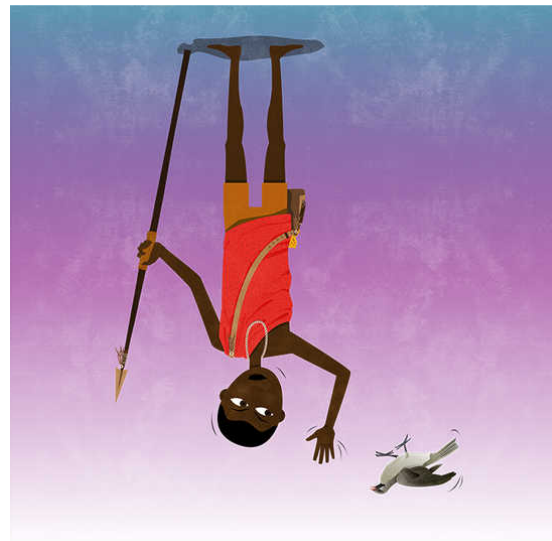


इसलिए गिगिइले ने अपना शिकार का सामान पेड़ के नीचे रख दिया, और कुछ सूखी टहनियाँ इकट्ठा कर एक थोड़ी सी आग जलाई। जब आग अच्छे से जलने लगी, तो उसने आग के बीचों-बीच एक सूखी हुई लंबी लकड़ी डाल दी। यह लकड़ी विशेष रूप से बहुत सारा धुआँ करने के लिए प्रयोग में लाई जाती थी। उसने जलती हुई लकड़ी का ठंडा सिरा अपने मुँह में डाल कर चढ़ना शुरू किया।

जल्दी ही उसे काम में लगी मधुमक्खियों की भजननाहट सुनाई देने लगी। वे पेड़ के तने के छेद में मौजूद अपना छेद से अंदर-बाहर आ जा रही थीं। छेद के पास पहुँचकर गिनाइले ने लकड़ी का धुआँ वाला सिरा छेद में डाल दिया। मधुमक्खियाँ हड़बड़ाकर, गरुसे में बाहर निकल आई और गिनाइले को जगह-जगह काटते हुए छेद से बाहर निकलकर उड़ गई क्योंकि उन्हें धुआँ बिलकुल पसंद नहीं था।



और इसलिए, जब गिनाइले के बच्चों ने नोटे की कहानी सुनी, उनके मन में इस छोटे पक्षी के लिए सम्मान था। जब भी वे शहर लेते थे, इस बात का ध्यान रखते थे कि वह छेद से का सबसे बड़ा हिस्सा शहरवालों चिड़िया के लिए रखे।





जब मधुमक्खियाँ बाहर चली गईं, गिगिइले ने अपना हाथ छत्ते में डाला और शहद से लबालब भरा हुआ छत्ते का एक भाग निकाल लिया। इस भाग से ढेर सारा शहद टपक रहा था, और इसमें मधुमक्खी के अंडे भी थे। उसने छत्ते को ध्यान से अपने कंधे पर लटके थैले में डाला, और नीचे उतरना शुरू किया।



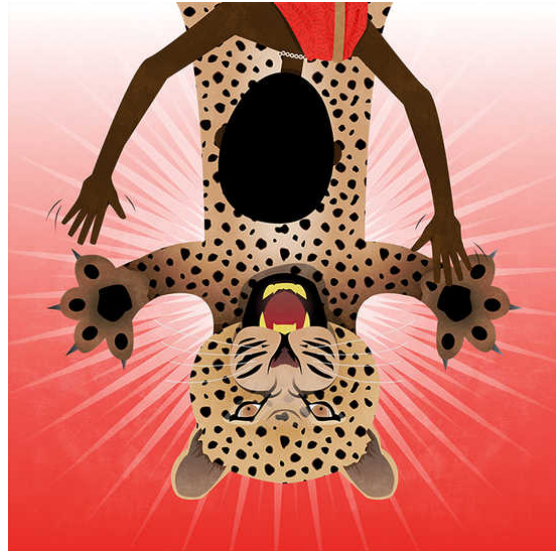
इससे पहले कि मादा तेंदुआ गिगिइले पर छलांग लगाती, वह हड़बड़ा कर पेड़ से नीचे आने लगा। जल्दबाज़ी में उससे एक डाल छूट गई जिससे वह बहुत ज़ोर से ज़मीन पर गिरा, और उसका टखना मुड़ गया। लंगड़ाते हुए वह जितनी तेज़ भाग सकता था, भागा। लेकिन खुशकिस्मती से, काफ़ी नींद में होने के कारण मादा तेंदुआ उसे पकड़ने के लिए पीछे नहीं भागी। इस प्रकार शहद का रास्ता दिखाने वाले पक्षी नगेदे ने अपना बदला ले लिया और गिगिइले ने सबक सीख लिया।

Here

गिगाडले जो भी कर रहा था, नहीं बहिन उर्खिकना से वह सब कुछ देख रहा था। वह डेस बात का इंजंजर कर रहा था कि गिगाडले धन्यवाद के रूप में शहर के छत्ते का एक बड़ा आगना उखकले लिखे छेडें गंगा। नगरे परे करे डाले परे गिगाडले छलंग लगे डेडि नोसे जमीन की तरफ आ रहा था। पास आकार परे रथ रथ परे रथ गया और अपने इनाम का इंजंजर कने लगा।

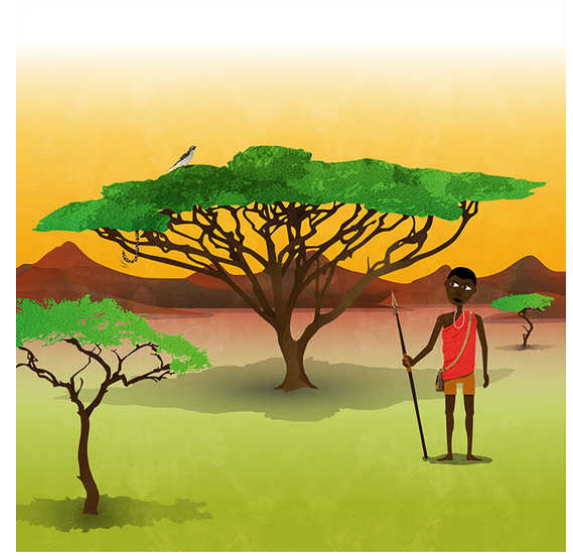


गिगाडले से सीधे हुए चहंता गया कि उसे हमेशा की तरह मधुमक्खियाँ की अनभनाहत क्यो नही सुनाई पड रही। “शायद छना पडें में गहराई में है,” उसने मन में सोचा। वह दुसरी डाली की तरफ बढ़ा। लेकिन वैसे ही उसने सामने देखा तो उसके सामने छत्ते की जगह पर माटा देईआ थी जो अपनी नींद बुरी तरह से बहिन गस्से में लगे रही थी। और उसके चेहरे की धुँ रही थी। उसने अपनी आँखें खोलीं और अपने बहिन पूने रीर के लिए





लेकिन, गिगइले ने पक्षी को नज़रअंदाज़ करके आग बुझाई, अपना शिकार का सामान उठाया और घर की ओर जाने लगा। नगेदे गुस्से से चिल्लाया, “टुर टुर!” गिगइले रुका, उसने पक्षी को घूर कर देखा और ज़ोर से हँसा। “क्या तुम्हें थोड़ा शहद चाहिए, मेरे दोस्त? हाँ! लेकिन सारा काम तो मैंने किया, और सारे डंक भी खाए। मैं इतनी मीठी शहद तुम्हारे साथ क्यों बाँटूँ?” फिर वह वहाँ से चला गया। उसकी बात सुनकर नगेदे को बहुत गुस्सा आया! यह कोई तरीका नहीं था उससे व्यवहार करने का! उसने सोचा वह उससे इस बात का बदला ज़रूर लेगा।



कई हफ़्तों बाद एक दिन गिगइले ने फिर नगेदे की शहद वाली आवाज़ सुनी। उसे फिर से स्वादिष्ट शहद की याद आ गई और उसने फिर से पक्षी का पीछा किया। गिगइले को अपने पीछे दौड़ाते हुए जंगल के छोर पर ले जाकर, नगेदे एक बड़े से बबूल के पेड़ पर आराम करने के लिए रुक गया। गिगइले ने सोचा “अच्छा “! “छत्ता ज़रूर इसी पेड़ में है।” उसने जल्दी से छोटी सी आग जलाई और मुँह में जलती हुई लकड़ी लेकर पेड़ पर चढ़ना शुरू कर दिया। नगेदे पेड़ पर बैठकर सब कुछ देखता रहा।